सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2024 का नवम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक वैशाख मास विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् डॉ. विश्वावसु गौड एवं राष्ट्रपति-सम्मानित प्रो. वैद्य बनवारीलाल गौड द्वारा लिखित **'ज्ञानमूला शान्ति '** नामक लेख में शान्ति को ज्ञानमूला बताकर आयुर्वेद के माध्यम से शान्ति के स्वरूप को बताया है। तत्पश्चात् पंडित अनन्त शर्मा द्वारा लिखित **'महाऋक्ष महर्षिवाल्मीकि'** लेख में आदि कवि वाल्मीकि के नामकरण एवं उनसे संबंधित भ्रांतियों को स्पष्ट किया है। इसी क्रम में गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' द्वारा लिखित **'भक्त रज्जब'** लेख में दादू सम्प्रदाय का उल्लेख कर भक्त रज्जब के जीवन चरित्र को बताया है। तत्पश्चात् श्री हरिहरदेव शर्मा द्वारा लिखित **'भवान्यष्टकम्'** स्तोत्र में माँ दुर्गा की स्तुति है। साथ ही श्री सूर्यनारायण शर्मा द्वारा लिखित **'दुर्गावती '** नामक लेख में बुन्देलखण्ड के राजा की पुत्री के जीवन चरित्र और साहस का वर्णन है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा